वेदों की ओर लौटो !

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १९ अंक ०६, १० जून २०१९

तपस्वी व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

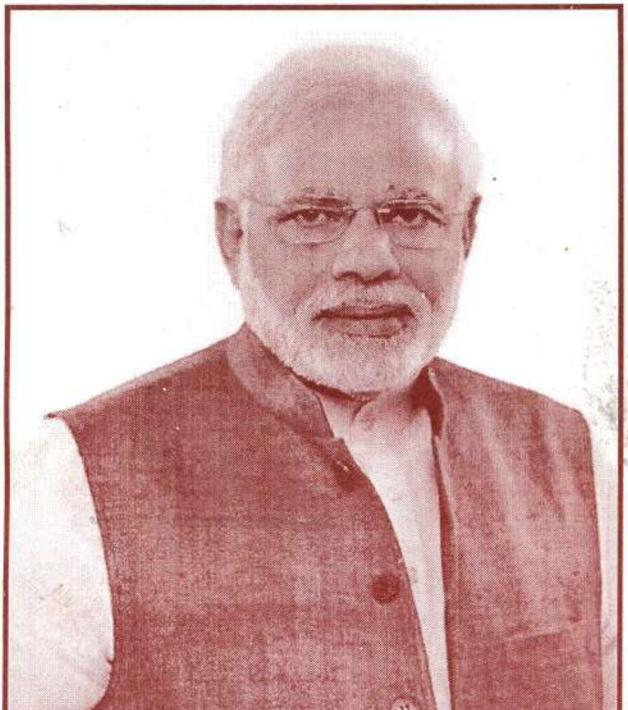

दूसरी बार प्रधानमन्त्री बनने पर
नरेन्द्र मोदीजी का अभिनन्दन...!

दो विजयी आर्य सांसदो को बधाई...!

बागपत (उ.प्र.) लोकसभा सीट से चुनाव जितनेवाले पूर्व केंद्रीय राज्यमन्त्री डॉ.सत्यपालसिंहजी एवं सीकर(राजस्थान) से जित हासिल करनेवाले स्वामी सुमेधानन्दजी का

हार्दिक अभिनन्दन..!

उपराष्ट्रपति श्री वैंकय्या नायडूजी के करकमलों से 'राष्ट्रपति पुरस्कार' ग्रहण करते हुए वैदिक विद्वान डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार।

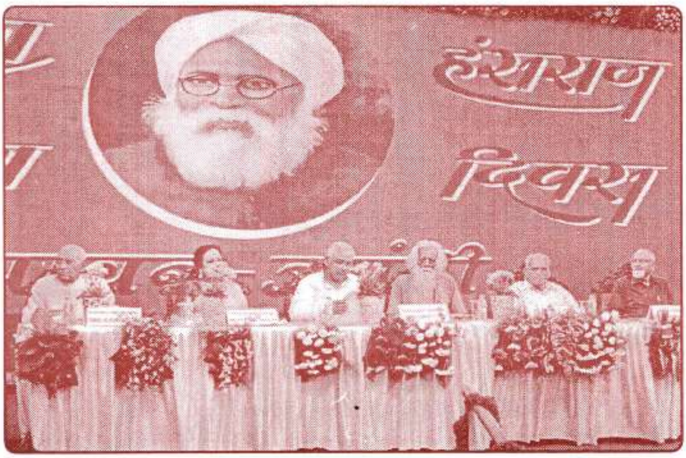

पुणे में आयोजित म.हंसराज जयन्ती समारोह में डीएवी के चैअरमन श्री पूनमजी सूरी, महाराष्ट्र सभा के संरक्षक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी आदि।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ कलि संवत् ५११९ विक्रम संवत् २०७५

दयानन्दाब्द १९५ ज्येष्ठ १० जून २०१९

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ४

२) सम्पादकीयम् ५

३) महर्षि दयानन्द (ऐतिहासिक लेख) ७

४) राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम १२

५) समाचार दर्पण १८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी २१

२) गरज आहे अष्टांगयोगाच्या आचरणाची! २२

३) शोकवार्ता २७

४) सभेचे मानवकल्याणकारी उपक्रम........ ३०

* प्रकाशक *

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु.१००/-

आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

श्रेष्ठ तत्त्वों की प्रार्थना..!

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।।

(ऋग्वेद २/२२/६)

पदार्थान्वय– हे **(इन्द्र)** सभों के अधिपति के समान वर्तमान! **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(वक्षस्य)** बल की **(चित्तिम्)** उस प्रकृति को जिससे कि विद्या को इकट्ठा करते है और **(सुभगत्वम्)** अत्युत्तम ऐश्वर्य **(पौषम्)** पुष्टि तथा **(रयीणाम्)** धन और **(तनूनाम्)** शरीरों की **(अरिष्टिम्)** रक्षा **(वाचः)** वाणी के बोध **(स्वाद्मानम्)** स्वादिष्ठ भोग **(अह्नाम्)** दिनों के **(सुदिनत्वम्)** सुदिनपन और **(श्रेष्ठानि)** धर्मज **(द्रविणानि)** धनों को **(धेहि)** धारण कीजियें।

भावार्थ :– इस मन्त्र में वाचकलुप्तोममालङ्कार है। विद्वानों को जैसे परमेश्वर ने समस्त वस्तुओं को उत्पन्न कर सब के लिये हित रूप सिद्ध कराई है, वैसे सबके कल्याण के लिये नित्य प्रयत्न करना चाहिये।

इस सूक्त में विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ को पिछे सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये ।

(महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य)

-* महाराष्ट्र सभा के आगामी कार्यक्रम *-

✧ **राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर**

३० जून से ७ जुलाई २०१९ तक (सूचना पृष्ठ क्र.२०)

स्थान–स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली–वै.

✧ **राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार पर्व**

(मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान)

१ अगस्त से ३० अगस्त २०१९

सभी आर्य समाजों के लिए विभिन्न तिथियों में श्रावणी वेदप्रचार पर्व (विस्तृत कार्यक्रम – पृष्ठ क्र.१२ पर देखें)

सम्पादकीयम्

मोदी सरकार को बधाई..!

हाल ही के लोकसभा चुनाव में अभूतपूर्व जीत हासिल करने के पश्चात् फिर एक बार नरेन्द्र मोदीजी प्रधानमन्त्री बन गये। उनके नेतृत्व में सहयोगी मन्त्रियों का शपथग्रहण समारोह पूरे उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ और देश को पुनश्च स्थायी शासन मिल गया। इस विजयपर्व पर मोदी सरकार का हृदय से अभिनन्दन एवं बधाई! २०१४ के बाद पुनः एक बार मोदीजी जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्त्व पर देश की जनता ने विश्वास जताया। देश की आन्तरिक व बाह्य समस्याओं का निवारण करने का सामर्थ्य नरेन्द्र मोदीजी में पूर्णतया है, यह बात जनता के मन में बैठ गयी थी। क्योंकि गत पांच वर्ष के कार्यकाल में श्री मोदीजी ने जिस तरीके से देश को चलाया और आतंकवादी गतिविधियों से पूरी तरह से निपटने में वे कामयाब रहें! यह सारे देशवासियों ने देखा था। यूं तो कह नहीं सकते कि उनके शासनकाल में देश का सर्वाधिक विकास हुआ और वे जनता का कल्याण करने में सफल रहें? बजाय इसके जनता ने मोदीजी के नेतृत्व को देखकर उन्हें चुनकर दिया और उनका विजयी अश्वरथ बढता ही गया। क्योंकि विपक्ष की तुलना में मतदाताओं के सम्मुख एकमात्र कोई करिष्माई चेहरा था, तो वह 'मोदी' ही! देश को चलाने के लिए वाकई ताकदवान् व प्रतिभाशाली नेता होना चाहिये! कमजोर नेतृत्व को लोग पसन्द नहीं करते । आजतक भारतीय राजनीति में प्रभावी नेतृत्व को ही जनता ने स्वीकारा है। फिर चाहे विकास के मुद्दों पर वे क्यों न असफल रहें हो? बिगडती अर्थव्यवस्था, रूपयों का अवमूल्यन, इंधन की दरों में बढोतरी, राफेल का कथित भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, किसानों की बढती आत्महत्यायें आदि मुद्दों पर पाच वर्ष में मोदी सरकार असफल होते हुए भी जनता ने मोदी को चुना। यह उनके नेतृत्व के कारण ही ! उनके समर्थ, मजबूत व निर्णायक नेतृत्व के पीछे देश की प्रबुद्ध जनता खडी रहीं। उनका मतदान मोदीजी के पक्ष सकारात्मक रहा। देश के नागरिकों ने यह अच्छी तरह से जान लिया था कि सामान्य परिवार से उभरे मोदीजी जेसे व्यक्तित्त्व को दिन-रात देश की चिन्ता है, उनका लक्ष्य भारत मां की सेवा का है। 'समूचे विश्व के सम्मुख उन्हें भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खडा करना है। इसके साथ ही देश की तरफ पाकिस्तान, चीन जैसे पडोसी राष्ट्र आंख उठाकर भी न देखें, इसका पूरा ध्यान उन्हें है।' यह भावना जनता में पूरी तरह बैठ गयी थी, इसलिए कमजोर विरोधी दल को दरकिनार कर सभी मतदाता मोदी के साथ रहे । परिणामस्वरूप पिछले चुनावों अपेक्षा भाजपा अकेले तीन सौ का आंकडा पार कर

गयी और उनका गठबन्धन ३५० से भी आगे! लोकतन्त्र पद्धति में जनता की ताकद क्या होती है ? यह इन चुनावों से ज्ञात हुआ। मोदी की इस महा लहर में देश पर लगभग साठ दशकों तक राज करनेवाला कांग्रेस राज खतम हुआ। वास्तविक रूप से इस विजय में भी जनता ने पार्टी के बजाय मोदी को ही देखा!

भाजपा गठबन्धन संसदीय नेता का चयन होने पर श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिये गये पहले भाषण में उनकी नम्रता झलकती है। 'सबका साथ, सबका विकास' इस नारे के साथ ही उन्होंने 'सबके विश्वास' को जोडा। इससे साफ नजर आता है कि मोदी सरकार अब मुस्लिमों के प्रति नया विश्वास जगाना चाहते है। यह एक अच्छी पहल है। देश में रहनेवाले सभी प्रकार की प्रजा का सर्वहित साध्य करना यह राजा का कर्तव्य होता है। अल्पसंख्य हो या बहुसंख्य उसके विकास के लिए जो धार्मिक या भावनात्मक अडचनें यदि उनके व्यक्तिगत या समग्र राष्ट्रीय हित में विघ्नबाधाएं खडी करती हो, तो उन्हें बडी उदारता के साथ दूर करने हेतु सदैव जागृत रहना होगा। इस दृष्टि से नयी सरकार को विचारपूर्वक कठोर कदम उठाने होंगें! इसके लिए सभी सम्प्रदाय चाहे वे हिन्दू हो या मुसलमान या अन्य कोई भी... उन्हें अपनी संकुचित वृत्तियों, अन्धविश्वासों व पाखण्डों को समाप्त करने के लिए कदम उठाने होंगें। इस दृष्टि से 'सबका विश्वास' जितने के लिए मोदीजी व उनकी सरकार को कठोरतापूर्वक पहल करेगी, जिससे मानवीय मूल्यों की स्थापना में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री मोदीजी और भाजपाध्यक्ष श्री अमित शहा दोनों गुजरात की पावन भूमि के निवासी हैं। इसी धरती पर १९५ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जैसी दिव्यात्मा ने जन्म लिया था। कितना महान योग कहिए कि आगामी २०२४ में महर्षि दयानन्द का द्वितीय जन्मशताब्दी वर्ष आ रहा है। तब मोदीजी को अपने शासनकाल में इस क्रान्तिकारी युगपुरुष का द्वितीय जन्म शताब्दी वर्ष सारे भारत वर्ष में मनाने का गौरव प्राप्त होगा। महर्षि दयानन्द ने वेदज्ञान द्वारा सारे विश्व के कल्याण का सपना देखा था। वे चाहते थे कि भारतवर्ष से सम्पूर्ण विश्व में वेद का पावन सन्देश पहुंचे और यह देश संसार का गुरु बनें। इस बात को यदि मोदीजी भलीभाँति समझ लेंगें और इस महापुरुष के बताये उपरोक्त सन्देश का सारे विश्व में फैलाने का संकल्प लेंगें, तो बहुत बडा उपकार होगा। क्योंकि देश की समस्याओं को छुडाने का सामर्थ्य महर्षि के विशुद्ध वैदिक विचारों में ही है। इसलिए मोदीजी भी अपनी समस्याओं के निवारण हेतु महर्षि दयानन्द के विचारों को देश में लागू करने हेतु प्रयत्नशील रहेंगें। इसके लिए उन्हें हमारी ओर से बधाई...!

-नयनकुमार आचार्य

८९ वर्ष पूर्व लिखा गया ऐतिहासिक लेख -

स्वामी दयानन्द

- मूल मराठी लेखक : त्र्य.शं.शेजवलकर
- अनुवादक :(स्व.)डॉ.कुशलदेव शास्त्री

लेखक परिचय : इतिहास शास्त्र के सूक्ष्म अध्येता एवं विश्लेषणकर्त्ता श्री त्र्यंबक शंकर शेजवलकरजी ने अपने संपादकत्व में सन् १९२९ में 'प्रगति' नामक मराठी साप्ताहिक शुरु किया था। इसका पहला अंक जून १९२९ को प्रकाशित हुआ। प्रथमांक में अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए आपने लिखा था - 'उच्च विचारों का प्रसार करने और विचारों द्वारा प्रगति लाने का यह एक प्रयास हैं।'

श्री शेजवलकरजी को क्रान्ति की अपेक्षा उत्क्रान्ति (क्रमिक उन्नति) अधिक पसंद थी। क्रांति इस संज्ञा से विरोध सूचित करने के लिए उन्होंने अपने साप्ताहिक पत्र को 'प्रगति' नाम दिया था।

'प्रगति' साप्ताहिक उच्चस्तरीय था। उनका उद्देश्य विचारों की नींव पर सुशिक्षितों को सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से प्रबुद्ध करना था। इसी साप्ताहिक के ३१ अक्तूबर १९२९ अंक में प्रकाशित यह लेख -

महाराष्ट्र में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्दजी के विषय में बहुत-सी गलतफहमियां फैली हुई हैं, जो कि अज्ञानवशात् फैली हैं। हमें इस विषय में जबरदस्त सन्देह है कि महाराष्ट्र में आखिर ऐसे कितने लोग हैं, जो स्वामीजी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व के विषय में आवश्यक जानकारी रखते हों। उनके कार्यों की महिमा के विषय में जाने बिना उनके विषय में दूषित मत फैलाने के लिए महाराष्ट्र के एक कलमबहादुर (निबन्धमालाकार विष्णु शास्त्री चिपलूणकर) के लेख जिम्मेदार हैं। अब चालीस वर्ष बीत जाने के बाद स्वामीजी के कार्य विभिन्न प्रान्तों में फल-फूलकर पुष्पित व सुरभित हो, उसकी लहरें महाराष्ट्र के अन्त:स्थल तक पहुँच गयी हैं। आज दलितोद्धार, पतित परावर्त्तन, शुद्धि अभियान, आर्य धर्म वृद्धि, हिन्दू संगठन आदि आन्दोलन भारतवर्ष में सुदृढ रूप से प्रस्थापित हो गए हैं, पर जिस व्यक्ति ने अत्यन्त कष्ट सहन कर, अपमान और उपहास की परवाह न करते हुए इस आस्तिक श्रद्धाभाव के साथ कि - 'सत्य

संकल्पों के प्रदाता भगवान हैं और वे ही अपने मनोरथ परिपूर्णता की ओर ले जायेंगे'- ये सभी बातें सर्वप्रथम प्रतिपादित की! महद् आश्चर्य है कि आज उनका यत्किंचित् भी स्मरण जन-सामान्य को नहीं रहा है।

कदाचित् स्वामी दयानन्द की विद्वत्ता सन्देहास्पद हो सकती है, कदाचित् उनके आचरण के विषय में भी कोई किसी कोने में बैठा बुदबुदाता, बडबडाता, गुनगुनाता हो! कदाचित् उनके द्वारा स्वीकृत मार्ग के प्रति भी मतभेद हो सकते हैं, पर अब इस विषय में मुझे कोई द्वैध, द्विधा या दुविधाभाव शेष प्रतीत नहीं होता कि समस्त हिन्दू समाज के बहाने अखिल मानव जाति के हित का एक प्रचण्ड सुधारक आन्दोलन के जन्मदाता स्वामी दयानन्द सरस्वती ही थे। मुसलमानों के आगमन से पहले या उससे कुछ सैकडों साल पहले से हिन्दू समाज वर्धिष्णुता- बढोतरी को छोडकर संकीर्ण-संकुचित-सा होता चला जा रहा था, जयिष्णुता को छोड अहिंसावाद के गप-शप में मशमूल-सा हो गया था, सतत पुरुषार्थ और अनेक प्रयत्नवाद को छोडकर दुर्बल दैववाद के चक्र में फँस गया था, उस समाज को अचूक तीक्ष्ण प्रभावशाली हेमगर्भ की मात्रा देकर स्वामी दयानन्दजी ने बेहोशी से होश-हवाश में लाया और तत्पश्चात् शनैः-शनैः प्राचीन सांस्कृतिक वैभव से सुपरिचित कराया। जिन आर्यों ने दुनिया के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक द्विग्विजय कर अपनी संस्कृति की छाप सभी ओर प्रस्थापित की थी, उन आर्यों के वंशजों की, विशेषत: तदन्तर्गत वेदों से अपनी मूल परम्परा को वर्तमान तक अविछिन्न रखनेवालों को - "आखिर हम कौन थे, हमारी उदात्त संस्कृति की विशेषता क्या और कैसी थी"- इसे सम्पूर्णतया विस्मृत कर स्वकर्तव्य-कर्म से च्युत होने और अपने उच्चस्थान से पदच्युत होनेवालों को यह अनवरत - पतन की स्थिति कितनी अनुचित और लज्जास्पद है - इसका बोध जिन्होंने सबसे पहले जागृत किया, उस दयानन्द का कार्य-कौशल एवं कृतित्त्व भारतवर्ष के इतिहास में नि:सन्देह चिरंजीव एवं अजरामर रहेगा।

इस समय हिन्दू समाज को सबसे बडा रोग भयग्रस्तता का लगा है। दूसरे का धक्का लगने पर जैसे घोंघा बाह्य अंगों को अपने कवच के नीचे समेटकर छिपा लेता है, मानों उसके वैसे संकुचित हो जाने पर उसे खानेवाला दुश्मन प्राणी स्वयं अपना रास्ता नापते हुए आगे बढ जायेगा, ठीक वैसे ही मुसलमानों का भय उत्पन्न होने के बाद हिन्दू समाज अपने ही कवच के नीचे दुबककर बैठा हुआ अपनी सुरक्षा के सपने संजो रहा है। सचेतन-जीवन्त और वर्धिष्णु प्राणी का मुख्य लक्षण तो अपने से बहि:स्थ

का भक्षण करना, उसे अपने पेट में डालना, उसके और अपने मांसपेशियों को एकजीव-एक रूप घटित होते हुए दिखलाई देती है। जब समाज अपने से अन्यों का अन्तर्भाव, बाहरी व्यक्तियों का समावेश अपने में नहीं कर पाता, तब मुख्य रूप से यह समझ लेना चाहिए कि वह समाज मृत्यु पथ का अनुगामी हो चुका है, मौत के घाट लग चुका है। जिन आर्य ब्राह्मणों ने भारतवर्ष के एक सिरे से दूरे सिरे तक वेद (अर्थात् शब्दार्थ की दृष्टि से) ज्ञान का वर्चस्व स्थापित कर अज्ञान अन्धकार में डुबे हुए अनेक परजातीय-परदेशी वनवासियों का समावेश आर्य संस्कृति में समाविष्ट कर लिया था, वे विशिष्ट आर्य वर्तमानकालीन उनके वंशजों की तरह संकीर्ण - संकुचित मतानुगामी नहीं थे। यह बात चंगेज खाँ की निम्न दन्तकथा से स्पष्ट होती है -

आख्यायिका है कि चंगेज खाँ एक बार कश्मीर नगरी में अवतीर्ण हुआ और अपने बाहुबल से उसने उस प्रदेश पर कब्जा कर लिया। चंगेज खाँ का अपना कोई मौलिक धर्म नहीं था। वह एक भटकी हुई 'मंगोल' टोली का नायक था। कश्मीरी ब्राह्मणों की संस्कृति को देखकर उसके मन में आया कि - हमें भी इस उच्च संस्कृति का सान्निध्य प्राप्त हो तो बडा अच्छा होगा। अत: उसने वहाँ के ब्राह्मणों को निमन्त्रण भेजकर उनसे उसने स्वयं को उनके धर्म में दीक्षित करने का अनुरोध किया, पर यवनों से बात करने के लिए भी तैयार न होनेवाले इन अहंकारी ब्राह्मणों ने वैसा करने से साफ इनकार कर दिया। ब्राह्मणों के इस कृत्य से चंगेज खाँ का मन बहुत ही बेचैन हो उठा, इसी चिन्ता में उसे उस रातभर नींद भी नहीं आयी और उसने मन में निश्चय कर लिया कि - दूसरे दिन प्रात: काल जो उसे प्रहिला मनुष्य दिखलाई देगा, उसके धर्म की दीक्षा वह स्वयं ग्रहण करेगा। दूसरे दिन उसे अपने तम्बू के सामने एक मुस्लिम फकीर दोहे गाता-गुनगुनाता हुआ नजर आया। उसे पूछते ही उस फकीर ने इस जगत् जेता चंगेज खाँ को स्वधर्म की दीक्षा देने का बेहर खुशी के साथ कबूल किया। क्योंकि मुहम्मद के आदेशानुसार बी काफिर को अपने धर्म में दीक्षित करने जैसी पुण्य प्रदान करनेवाली अन्य कोई बात नहीं है।

स्वयं मुसलमान होने के बाद क्रोध से आग बबूले हुए चंगेज खाँ ने अपने नये धर्म की उपरोक्त आज्ञा को ताबडतोब अमल में लाना शुरु किया। अगले ही दिन अपने अभिनव धर्म का असाधारण अभिमान धारण कर इस पराक्रमी पुरुष ने अपमान करनेवाले समस्त ब्राह्मणवृन्द को गिरफ्तार कर जबरदस्ती मुसलमान बनाना शुरु किया। हिन्दुस्तान के मुसलमानों की उत्पत्ति प्राय: इसी प्रकार हुई है।

विस्तार और प्रसार जैसे सजीव-सचेतन प्राणि का पहला धर्म है, उसी प्रकार सुदृढीकरण उसका दूसरा धर्म है। दूसरों का समावेश या अन्तर्भाव अपने में कर लेने के पश्चात् उन्हें सम्पूर्ण रूप से स्वात्मवत् एकरूप बनाना शान्तिकालीन समाज का यह आद्य एवं अत्यावश्यक कर्तव्य है। ईसाई और मुस्लिम मतावलम्बी इस व्यावहारिक सिद्धान्त को आचरण में लाने की आग्रहपूर्वक प्रार्थना प्राय: अपने अनुयायियों से करते हुए दिखलाई देते हैं। अफ्रीका के निर्वस्त्र-नग्न, पिछडे हवशी लोगों के बीच रहते हुए भी ईसाई मिशनरी या मुसलमान मौलवी अपेन कुरआन या बाइबिल को उन लोगों को पढाये बिना नहीं रहते। वे यह नहीं कहते कि इन नग्न-धडंग लोगों को हजारों वर्षों की उन्नति से निर्मित हमारा धर्म आखिर कैसे समझेगा? समझे या न समझे अफ्रीकी सन्तान की रुचि-अरुचि की परवाह न करते हुए वे अपने पूर्वजों की रुढि-परम्परा के अनुसार उन्हें कडवी दवा पिलाने का कार्य करते ही रहते हैं। इसी कारण वे दुनिया के बहुत बडे भू-भाग पर छा गए हैं, तथा अपने क्षेत्र को और अधिक व्यापक बनाने के लिए उनका कार्य पुरुषार्थ और संयुक्त उद्योग बडे ही जोरों से सतत चालू है।

हम हजारों वर्षों से एक-दूसरे के पास सन्निकट रह रहे हैं, फिर भी हमें ब्राह्मण वर्ग से बाहर वेदाध्ययन करना अप्रशस्त-अनुचित प्रतीत हो रहा है, फिर शेष अन्य समग्र संस्कृति के शिक्षण देने के अभियान की बात तो कोसों दूर रही। राजनीतिक चुनावों का समय सन्निकट आने पर हम लोग अपने मतदाताओं के संख्या की प्रचण्डता बतलाने के लिए महार, चमार, मांग आदि तथाकथित अस्पृश्य या भील, गोंड, कातकरी आदि अन्य वनवासी लोगों का समावेश हिन्दू धर्म में करने की कोशिश करते हैं, पर उनमें से कितने लोग ऐसे हैं जिन्हें हिन्दू धर्म के मुख्य ग्रन्थों का कम से कम नाम तो मालूम है? और न ही हमें इस बात की किसी प्रकार की चिन्ता है। मुस्लिम मजहब में दीक्षित हबशी यदि होशियार और पराक्रमी हैं, तो इसी जन्म में पूर्ण गौरवर्णीय तुर्किस्तान का सेनापति या बगदाद के खलीफा का दामाद हो सकता है। पर हमें मात्र हजारों वर्षों से पडौस में रहनेवाला व्यक्ति अस्पृश्य प्रतीत होता है। इस प्रकार का अन्धेरखाना-गडबड-झाला जिस धर्म में चालू है और उसे उसी प्रकार चलाए रखने में जिस समाज के शिष्य वर्ग को अपनी धर्म-रक्षा प्रतीत होती है, तो इसमें ऐसी कौन-सी आश्चर्य की बात है कि हमें सुनाई दे कि- उस धर्म का ह्रास हो गया,उस धर्म के लोग सारी दुनिया में दीन-हीन बन गए और पराये-परदेशियों की प्रतिदिन लात खाने का दुर्दशामय नौबत

भी उनके जीवन में उत्पन्न हो गई।

प्राचीनकालीन आर्य ऐसे नहीं थे, इस विषय में यदि किसी को सन्देह हो, तो उसे चारों ओर जरा सूक्ष्मता से देख लेना चाहिए। पूर्वी बंगाल में जाने पर उसे यह दिखाई देगा कि वहाँ के उच्चवर्णीय हिन्दू भी मूलत: मांगोल वंश के हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, चितरंजनदास, अथवा बाबू विपिनचन्द्रपाल की ओर देखेंगें, तो आपमें से हर किसी को निश्चित रूप से हमारे कथन की सच्चाई ध्यान में आ जायेगी। जनरल के वेश में सुभाष बाबू को देखकर उनके नाम-गाँव से अपरिचित कोई भी व्यक्ति उन्हें जापानी इन्सान कहेगा। गुरखों के सन्दर्भ में भी यही बात है, और यही बात दक्षिण दिशा के द्रविड लोगों के विषय में है। इन सब बातों को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार में वंश कभी बाधक नहीं बनता था। फिर एक समय अतीत काल में प्रचलित हमारी यह हितकारक बात स्वयं हमने ही क्यों बन्द कर दी? फिर चाहे वह हितैषी बात किसी भी कारण से क्यों न बन्द की गयी हो, अब आँख खुल जाने पर उसे फिर से हमें क्यों न शुरु कर देना चाहिए? धर्म प्रसार, स्वधर्मियों का संगठन, संस्कृति का सुदृढीकरण, पथ-भ्रष्ट-पतितों का पुनरुद्धार, अनाथों का सम्यक् पालन, सब मनुष्यों की इहलौकिक-पारलौकिक और नैतिक उन्नति-इन सब बातों का शुभारम्भ जिस महापुरुष ने इस देश में पुनः प्रचलित किया उनके भारतवर्ष पर महान् उपकार हुए हैं, और उनका नाम इस देश के कर्त्ता-धर्त्ता अविस्मरणीय महपुरुषों की मालिका में गूँथना या पिरोना सर्वथैव समुचित है। इस विषय में किसी प्रकार की शंका उत्पन्न करना केवल मात्र क्षुद्रवृत्ति का प्रदर्शन करना है। हमें इस बात में किञ्चित् मात्र भी सन्देह नहीं कि-आज यदि कुछ तथाकथित शिष्ट पुरुष वैसा कर रहे होंगें, तो कालान्तर में उनके नाम सुनिश्चित रूप से नष्ट होंगें और दयानन्दजी का नाम हमें चिरकाल तक स्फूर्ति प्रदान करता रहेगा।

(साभार – अनुवादक की 'महर्षि दयानन्द और महाराष्ट्र' इस कृति से)

हु.बिस्मिल-आत्मकथा वाचन

सत्यार्थ प्रकाशच्या वाचनानंतर आता आर्य क्रांतिकारी हु.रामप्रसाद बिस्मिल यांच्या आत्मकथेचे ३५ भाग नुकतेच वॉटसअप, फेसबुकवरून प्रसारित झाले. नांदेडचे आर्य लेखक श्री नारायणराव कुलकर्णी यांनी अनुवादित केलेल्या या कथेचे वाचन पुण्याच्या गीता चारूचंद्र उपासनी यांनी केले. श्री रणजीतजी चांदवले व इतर आर्य कार्यकर्त्यांच्या सहकार्याने वरील कथावाचन महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेने प्रायोजित केले होते. सर्वांचे अभिनंदन!

।।ओ३म्।।

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज, परली-वैजनाथ जि.बीड

मानवमात्र की सुख-शांति एवं सर्वंकश विकास हेतु वेद प्रचार का व्यापक उपक्रम

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान - २०१९

(श्रावणी उपाकर्म पर्व-वेद प्रचार माह)

दि.१ से ३० अगस्त २०१९

राज्यस्तरीय कार्यक्रम

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
आचार्य डॉ.ओमव्रतजी	आर्य समाज, बन्सीलालनगर,सं.नगर	१ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, सरस्वती कॉलनी,सं.नगर	२ से ४ अगस्त २०१९
गुरुकुल सतारपुर (उ.प्र.)	आर्य समाज, गारखेडा, संभाजीनगर	५ से ८ अगस्त २०१९
पं.सुखपालजी आर्य	आर्य समाज,परली-वै. जि.बीड	९ से १५ अगस्त २०१९
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर	१६ से २२ अगस्त २०१९
देहरी, सहारनपुर(उ.प्र)	आर्य समाज, सोलापुर	२३ से २९ अगस्त २०१९
पं.शिवकुमारजी शास्त्री	आर्य समाज, जालना	१, २ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, परभणी	३ से ८ अगस्त २०१९
सहारनपुर(उ.प्र.)	आर्य समाज, नांदेड	९, १० अगस्त २०१९
एवं	आर्य समाज, देगलुर	११ से १५ अगस्त २०१९
पं.प्रदीपजी आर्य	आर्य समाज, शहापुर ता.देगलूर	१६, १७ अगस्त २०१९
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, मुदखेड	१८ से २२ अगस्त २०१९
फरिदाबाद(हरि.)	आर्य समाज, धर्माबाद	२३ से २९ अगस्त २०१९
स्वामी अखिलानंदजी	आर्य समाज, रामनगर, लातूर	१ से ७ अगस्त २०१९
सरस्वती	आर्य समाज, भक्तिनगर, लातूर	८, ९ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) गुरुकुल,	आर्य समाज, शिवणखेड ता.चाकुर	१० से १४ अगस्त २०१९
पूठ(उ.प्र.) एवं	आर्य समाज, रेणापुर	१५ से १९ अगस्त २०१९
पं.संदीपजी 'वैदिक'	आर्य समाज, किल्लेधारुर	२० से २६ अगस्त २०१९
(भजनोपदेशक)मुज्जफरनगर	आर्य समाज, अंजनडोह	२७ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, अंबाजोगाई	२८, २९ अगस्त २०१९

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
आचार्य प्रो.चंद्रपालजी आर्य (वैदिक विद्वान) गाजियाबाद (उ.प्र.)एवं पं.विमलदेवजी आर्य (आर्य भजनोपदेशक) बरेली(उ.प्र.)	आर्य समाज, उमरगा	१ से ४ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, गुंजोटी	५ से ७ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, औराद गुंजोटी	८ से ९ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, निलंगा	१० से १५ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, औराद शहाजानी	१६ से २२ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, उदगीर	२३ से २९ अगस्त २०१९
प्रा.डॉ.नयनकुमारजी आचार्य (वैदिक विद्वान) परली-वै. एवं पं.सोगाजी धुन्नर (आर्य भजनोपदेशक) डोंगरगांव	आर्य समाज, हिंगोली	१७ से १९ अगस्त २०१९
पं.चंद्रकांतजी वेदालंकार (वैदिक विद्वान)हिंगोली	आर्य समाज, आखाडा बाळापुर	१७, १८ अगस्त २०१९
प्रा.नारायणरावजी कुलकर्णी (वैदिक विद्वान) नांदेड एवं पं.प्रतापसिंहजी चौहान (आर्य भजनोपदेशक) उदगीर	आर्य समाज, घोडा ता.कळमनुरी	९ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, जरोडा ता.कळमनुरी	१० अगस्त २०१९
	आर्य समाज, येहळेगांव ता.हदगांव	११, १२ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, मरडगा ता.हदगाव	१३ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, भाटेगांव ता.हदगाव	१४,१५ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, तळणी ता.हदगाव	१६, १७ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, शिऊर ता.हदगाव	१८ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, कंजारा ता.हदगाव	१९ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, तामसा ता.हदगाव	२०, २१ अगस्त २०१९
पं.सुधाकरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) पुणे, पं.प्रतापसिंहजी चौहान (आर्य भजनोपदेशक)उदगीर	आर्य समाज, निवघा ता.हदगाव	२२ से २४ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, हदगांव ता.हदगाव	२५ से ३१ अगस्त २०१९
पं.ब्रिजेशजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) हाथरस (उ.प्र.) एवं पं.ऋषिपालजी 'पथिक' (आर्य भजनोपदेशक) सहारनपुर	आर्य समाज, चिंचवडगांव, पुणे	१, २ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, नानापेठ, पुणे	३, ४ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, वारजे मालवाडी, पुणे	५ से ८ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, पिंपरी, पुणे	९ से १५ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, देवलाली कैम्प,नाशिक	१६ से १८ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, भगूर, नाशिक	१९ से २१ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, पंचवटी, नाशिक	२२ से २३ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, धुलिया	२४ से ३० अगस्त २०१९

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
प्रा.चंदेश्वरजी शास्त्री	आर्य समाज, लोहारा ता.उदगीर	१० से १२ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) लातूर एवं	आर्य समाज, साकोळ ता.शि.अनंतपाळ	१६ अगस्त २०१९
सौ.कांचनदेवी शास्त्री	आर्य समाज, सुगाव ता.चाकुर	१७ अगस्त २०१९
(आर्य भजनोपदेशिका)लातूर	आर्य समाज, गांजुर ता.चाकुर	२५ अगस्त २०१९
प्रा.डॉ.नरेन्द्रजी शिंदे	आर्य समाज, हाळी ता.उदगीर	११, १२ अगस्त २०१९
पं.प्रकाशवीरजी आर्य	आर्य समाज, नेत्रगांव ता.उदगीर	१७, १८ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) उदगीर	आर्य समाज, हेर ता.उदगीर	२५ अगस्त २०१९
पं.श्रीरामजी आर्य	आर्य समाज,अजनी ता.शि.अनंतपाळ	८ से १० अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) लातूर एवं	आर्य समाज, बिबराळ	११ से १३ अगस्त २०१९
पं.शिवाजीराव निकम	आर्य समाज, उजेड	१४ अगस्त २०१९
(भजनोपदेशक) मोगरगा	आर्य समाज, स.अंकुलगा ता.निलंगा	१५ अगस्त २०१९
पं.माधवराव देशपांडे	आर्य समाज, ओम सोसायटी,पुणे	४ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) पुणे एवं	आर्य समाज, खडकी	११ अगस्त २०१९
सौ.नलिनीदेवी देशपांडे	आर्य समाज, खडकवासला	१२ अगस्त २०१९
(वैदिक विदुषी) पुणे	आर्य समाज, मंचर	२५ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, आळंदी	२६ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, अहमदनगर	२९ अगस्त २०१९
पं.राजवीरजी शास्त्री (वैदिक विद्वान) सोलापूर	आर्य समाज, करडखेल	१ से ३ अगस्त २०१९
पं.सुभाषजी गायकवाड	आर्य समाज, धाराशिव(उस्मानाबाद)	४, ५ अगस्त २०१९
(भजनोपदेशक) सोलापूर	आर्य समाज, तेरखेडा ता.जि.उ.बाद	६ अगस्त २०१९
पं.अनिलजी आर्य	आर्य समाज, कळंब	७, ८ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) धर्माबाद	आर्य समाज, वाशी	९ से ११ अगस्त २०१९
पं.सुभाषजी गायकवाड	आर्य समाज, ईट ता.वाशी	१२ अगस्त २०१९
(आर्य भजनोपदेशक)सोलापूर	आर्य समाज, घाटपिंपरी ता.वाशी	१३, १४ अगस्त २०१९
पं.सदाशिवरावजी जगताप (वैदिक विद्वान)वाशी	आर्य समाज, टाका ता.औसा	१, २ अगस्त २०१९
पं.अशोकरावजी कातपुरे	आर्य समाज, बेलकुंड ता.औसा	३ अगस्त २०१९
(आर्य भजनोपदेशक) सुगाव	आर्य समाज, रामेगांव ता.औसा	४ अगस्त २०१९

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.ज्ञानकुमारजी आर्य (वैदिक विद्वान)लातूर पं.विजयपालजी कुल्ले (भजनोपदेशक) शिवणखेड	आर्य समाज, मोगरगा ता.औसा आर्य समाज, मंगरुळ ता.औसा	१ से ३ अगस्त २०१९ ४, ५ अगस्त २०१९
पं.आर्यमुनिजी (वैदिक विद्वान)डोंगरगांव एवं पं.सोगाजी घुन्नर (आर्य भजनोपदेशक) डोंगरगांव	आर्य समाज, धनेगांव ता.उदगीर आर्य समाज, बलांडी ता.देवळी आर्य समाज, टाकळी ता.उदगीर आर्य समाज, दैठणा ता.शि.अनंतपाळ आर्य समाज, मदनसुरी आर्य समाज, येलमवाडी आर्य समाज, कासार बालकुंदा आर्य समाज, बडूर आर्य समाज, कासार शिरसी ता.निलंगा आर्य समाज, अंबुलगा ता.निलंगा आर्य समाज, हनुमंतवाडी ता.निलंगा आर्य समाज, कंधार आर्य समाज, मुखेड आर्य समाज, बाराहाळ्ळी आर्य समाज, किनवट आर्य समाज, उमरी आर्य समाज, डोंगरगांव	१ अगस्त २०१९ २ अगस्त २०१९ ३, ४ अगस्त २०१९ ५ अगस्त २०१९ ६, ७ अगस्त २०१९ ८, ९ अगस्त २०१९ १० अगस्त २०१९ ११ अगस्त २०१९ १२, १३ अगस्त २०१९ १४, १५ अगस्त २०१९ १६, १७ अगस्त २०१९ २० अगस्त २०१९ २१ अगस्त २०१९ २२ अगस्त २०१९ २३ अगस्त २०१९ २४ अगस्त २०१९ २५, २६ अगस्त २०१९
पं.चैतन्यजी रडे(भजनोपदेशक) नशिराबाद	आर्य समाज, भुसावल जि.जलगांव	२० अगस्त २०१९
प्रा.डॉ.अखिलेशजी शर्मा (वैदिक विद्वान) लातूर पू.योगमुनिजी, (वैदिक विद्वान) धुळे	आर्य समाज, सटाना नाका, मालेगांव आर्य समाज, नशिराबाद ता.जि.जलगांव आर्य समाज, इदगांव आर्य समाज, मंजुषा कॉलनी, जळगांव	३, ४ अगस्त २०१९ ११ अगस्त २०१९ १२ अगस्त २०१९ १७, १८ अगस्त २०१९
पं.सदाशिवरावजी जगताप (वैदिक विद्वान) वाशी पं.सुभाषजी गायकवाड, (भजनोपदेशक) सोलापुर	आर्य समाज, गिरवली ता.वाशी आर्य समाज, चांदवड ता.वाशी आर्य समाज, अंजनसोंडा ता.परंडा आर्य समाज, मानेवाडी ता.जि.बीड	१५ अगस्त २०१९ १६ अगस्त २०१९ १७ अगस्त २०१९ १८ अगस्त २०१९

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
डॉ.प्रकाशजी कच्छवा, औराद (श.) पं.अजितजी शाहीर, निलंगा	आर्य समाज, हलगरा आर्य समाज, बोटकूळ आर्य समाज, नदीवाडी	२०, २१ अगस्त २०१९ २२ अगस्त २०१९ २३ अगस्त २०१९
पं.योगीराजजी भारती, परली-वै. पं.वशिष्टजी आर्य, अंबाजोगाई (विद्वानद्वय)	आर्य समाज, बनसारोळा आर्य समाज, शिराढोण आर्य समाज, बीड	१६ अगस्त २०१९ १७ अगस्त २०१९ १८, १९ अगस्त २०१९
पं.भानुदासराव देशमुख, अंबाजोगाई पं.भागवतरावजी आघाव, सारडगांव	आर्य समाज,माजलगांव	१९, २० अगस्त २०१९
पं.लक्ष्मणरावजी आर्य, परली-वै. पं.भागवतरावजी आघाव,सारडगांव	आर्य समाज, गंगाखेड जि.परभणी	२७ अगस्त २०१९
प्रा.अरुणजी चव्हाण, परली-वै. पं.लक्ष्मणरावजी आर्य, परली-वै.	आर्यसमाज,घाटनांदुर ता.अंबाजोगाई आर्य समाज,सारडगांव ता.परळी-वै.	१७ अगस्त २०१९ १८ अगस्त २०१९
पं.तानाजी शास्त्री,परली	आर्य समाज,मांडवा ता.परळी-वै.	२५ अगस्त २०१९
पं.सौ.लीलावती जगदाळे, परभणी पं.विजयकुमारजी अग्रवाल, परभणी	आर्य समाज, मानवत	११ अगस्त २०१९
पं.दयानंदजी शास्त्री, परभणी	आर्य समाज, पूर्णा	१८ अगस्त २०१९
पं.दिगंबरजी देवकते,परभणी	आर्य समाज, जिंतूर	२५ अगस्त २०१९
प्रा.ओमप्रकाशजी होळीकर,लातूर पं.राजेन्द्र दिवे, लातूर	आर्य समाज, स्वा.सै.कॉलनी,लातूर	११, १२ अगस्त २०१९
पं.शेरसिंहजी शास्त्री,लातूर पं.व्यंकटेशजी हालिंगे, लातूर	आर्य समाज, कव्हा ता.जि.लातूर आर्य समाज, पानचिंचोली आर्य समाज, होळी	८, ९ अगस्त २०१९ ११, १२ अगस्त २०१९ १७, १८ अगस्त २०१९
प्रा.डॉ.चंद्रशेखरजी लोखंडे, लातूर	आर्य समाज, मुशिराबाद	२५ अगस्त २०१९

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
प्रा.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री,	आर्य समाज, कोल्हापुर	११ अगस्त २०१९
(वैदिक विद्वान) परळी-वै.	आर्य समाज, इचलकरंजी	१२ अगस्त २०१९
पं.धोंडीरामजी शेप गुरुजी, जिंतूर	आर्य समाज, अहमदपूर	११, १२ अगस्त २०१९
प्रा.शरदचंद्रजी डुमणे, लातूर	आर्य समाज, अंधोरी	१३ अगस्त २०१९
(विद्वानद्वय)	आर्य समाज, येलदरी	१४ अगस्त २०१९
पं.सोममुनिजी वानप्रस्थी, परळी	आर्य समाज, चाकूर जि.लातूर	१८ अगस्त २०१९
पं.आचार्य सत्येंद्रजी, गुरुकुल, परली	आर्यसमाज, वडवळ नागनाथ जि.लातूर	१९ अगस्त २०१९
प्रा.अर्जुनरावजी सोमवंशी, उदगीर	आर्य समाज, बोरुळ ता.उदगीर	१८ अगस्त २०१९
पं.विज्ञानमुनिजी, परळी	आर्य समाज, मुरुम ता.उमरगा	१७ अगस्त २०१९
पं.कर्णसिंहजी आर्य, माडस	आर्य समाज, सास्तूर ता.उमरगा	१८ अगस्त २०१९
पं.माणिकरावजी टेम्पे, उदगीर	आर्य समाज, कदेर ता.उमरगा	३, ४ अगस्त २०१९
पं.प्रतापसिंहजी चौहान, उदगीर	आर्य समाज, बेडगा ता.उमरगा	५, ७ अगस्त २०१९
	आर्य समाज, माडज ता.उमरगा	१२ अगस्त २०१९

-० विशेष सूचना ०-

सभी आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि, आप सभी सभाद्वारा प्रदत्त तिथियों के अनुसार ही श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमों का आयोजन करें। इन कार्यक्रमों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करते हुए श्रावणी उत्सव उत्साहपूर्वक मनावें। सभाद्वारा भेजे गये विद्वानों से ही कार्यक्रम लेवें, अन्य किसी संगठन द्वारा भेजें विद्वानों के कार्यक्रम न लेवें। वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाकर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करने हेतु प्रयास करें। यदि कोई कठिनाई हो तो सभा के पदाधिकारियों से संपर्क करें।

श्रावणी कार्यक्रमों की सफलता हेतु आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ! साथ ही आमन्त्रित विद्वानों से भी निवेदन है कि वे पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आर्यसमाजों में वेदप्रचार हेतु समयपर पहुँचे। आज के बदलते परिवेश में समाज व राष्ट्र में सुधार लाने हेतु वेदज्ञान की प्रासंगिकता को प्रभावी ढंग से जन-जन तक पहुँचावे।

-: विनीत :-

योगमुनी (प्रधान)

राजेन्द्र दिवे (मन्त्री) मो. ९८२२३६५२७२

उग्रसेन राठौर (कोषाध्यक्ष)

सुधाकर शास्त्री (वेदप्रचार अधिष्ठाता) मो.९४२१४८४५४१

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड (महाराष्ट्र)

(समाचार दर्पण) स्वास्थ्य रक्षा शिविर सोत्साह सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाराष्ट्र सभा द्वारा प्रान्तीय स्तर पर 'स्वास्थ्य रक्षा शिविर' का आयोजन हुआ, जिसमें वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी के मुख्य निर्देशन में स्वास्थ्यप्रेमियों ने प्राकृतिक एवं आयुर्वेद उपचार पद्धति का लाभ उठाते हुए उत्तम आरोग्य की प्राप्ति हेतु प्रशिक्षण पाया। सात दिवसीय इस शिविर में वमन, विरेचन, मृत्तिका लेप, एनिमा, गिली चादर, टब स्नान, बाष्पस्नान, मिट्टि स्नान, मॉलिश, जलनेति आदि क्रियाएं सिखायी गयी। शिविर के दौरान सर्वश्री आचार्य सत्येन्द्रजी, लक्ष्मण आर्य गुरुजी, वीरेन्द्र शास्त्री, अरुण चौहान, नयनकुमार आचार्य आदियोंने प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न सैद्धान्तिक विषयों पर मार्गदर्शन दिया।

शिविर का समापन सभामन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षणार्थियों में से सर्वश्री तानाजी चौगुले, आनन्द नाईक, नरेन्द्र शास्त्री, अमोल तुपसुन्दर आदियों ने अपने शिविरकालीन मनोगत व्यक्त किये। इस अवसर पर आर्य समाज परली के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया, सोममुनिजी तथा आर्य समाज परली के कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। शिविर में नासिक, सोलापुर, नान्देड, बार्शी, पुणे आदि स्थानों से प्रशिक्षणार्थी पधारे थे।

लातूर के वार्षिकोत्सव में वेदज्ञान की अमृतवर्षा

'सम्प्रति माता-पिता एवं अध्यापकों पर बच्चे-बच्चियों के निर्माण की सर्वाधिक जिम्मेदारी है। हमारी सन्तानें यदि संस्कारशील नहीं बनेगी, तो परिवार, समाज व राष्ट्र का विकास कैसे होगा? अत: राष्ट्रनिर्माण हेतु सभी को सदैव जागरुक होना होगा!', यह विचार थे वैदिक विद्वान् स्वामी सच्चिदानन्दजी सरस्वती के! लातूर (महाराष्ट्र) की आर्य समाज, गांधी चौक के ८४ वें वार्षिकोत्सव पर स्वामीजी मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहें थे। दि.२७, २८, २९ मार्च २०१९ को इस आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। तीन दिनों तक प्रात: एवं रात्रि में स्वामीजी ने अपनी विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। मुजफ्फरनगर से पधारे आर्य भजनोपदेशक पं.सन्दीपजी वैदिक ने अपने ओजस्वी भजनों द्वारा मन्त्रमुग्ध किया। प्रात:कालीन यज्ञ में अनेकों यजमानों ने सश्रद्ध आहुतियाँ प्रदान की। आर्य समाज के उपप्रधान श्री ओमप्रकाशजी पाराशर, मन्त्री चन्द्रभानुजी परांडेकर तथा अन्य पदाधिकारियों ने समारोह की सफलता हेतु प्रयत्न किये।

डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार को 'राष्ट्रपती पुरस्कार'

आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठ वैदिक विद्वान आचार्य प्रो.डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार को इस वर्ष राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। उनके द्वारा किये गये वेदविद्या के प्रचार व प्रसार कार्य तथा संस्कृत सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा दि.४ अप्रैल २०१९ को नई दिल्ली के अशोका होटल में आयोजित विशेष समारोह में देश के उपराष्ट्रपति श्री व्यंकय्या नायडू ने उन्हें यह सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया। ५ लाख रूपयों की गौरव राशि, सम्मानपत्र एवं शाल यह इस पुरस्कार का स्वरूप था।

दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत रामजस कॉलेज में लगभग ३७ वर्षों तक संस्कृत के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष पद पर रह चुके श्री रघुवीरजी ने वैदिक विचारों के प्रचार व प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाई हैं।आज तक आपने लगभग २५ पुस्तकें लिखी हैं। आपकी लेखन व प्रचार सेवाओं के लिए आपको वेदवेदांग पुरस्कार, आर्यभूषण पुरस्कार तथा पं.दीनानाथ शास्त्री, पं.युधिष्ठिर मीमांसक, पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय इन महापण्डितों की स्मृतियों में रखे गये पुरस्कारों सहित दर्जनों पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आर्य महासम्मेलनों, आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों, सभा-सम्मेलनों तथा विशेष बृहद्यज्ञों में आपको मार्गदर्शक वक्ता, व्याख्याता व ब्रह्मा के रूप में आमंत्रित किया जाता है। ऐसे सरलहृदयी विद्वान को देश का सर्वोच्च राष्ट्रपति सम्मान मिलने पर आर्य जगत् की ओर से उनका अभिनन्दन व बधाई !

पुणे में मनायी गयी म.हंसराज जयन्ती

डी.ए.वी.प्रबंधकर्त्री समिति द्वारा २० अप्रैल २०१९ को औंध (पुणे) की डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में महात्मा हंसराज जी की १५५ वी जयन्ती उत्साहपूर्वक मनायी गयी ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती की प्रमुख उपस्थिति में तथा डी.ए.वी.के चेअरमन पद्मश्री पूनमजी सूरी की अध्यक्षता में आयोजित इस जयन्ती समारोह की शुरुआत बृहद्यज्ञ से हुई। इस समारोह में स्वामी श्रद्धानन्दजी सहित आर्य जगत् के ६ संन्यासियों व १० विद्वानों को शॉल, प्रशस्तिपत्र, तुलसी के पौधे एवं भेट राशियां प्रदान कर सम्मानित किया गया। विद्वानों में डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार, योगेन्द्रजी याज्ञिक, आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश के साथ ही महाराष्ट्र के

पं.योगिराज भारती (परली) एवं श्रीमती इन्दुमति वानप्रस्था (लातूर) भी शामिल हैं। समारोह में श्री सूरीजी, प्रमुख अतिथि डॉ.निशा जायसवाल के मौलिक व्याख्यान के साथ ही छात्रों का अभिनन्दन, अध्यापकों का सम्मान, बच्चों के नृत्य-नाटिका आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए ।

परभणी में 'होली मिलन पर्व' सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज परभणी द्वारा वैदिक पद्धति से 'होली मिलन पर्व' यज्ञ, भजन, प्रवचनादि विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया गया। प्रात: पं.दयानन्द शास्त्रीजी के ब्रह्मत्व आयोजित 'वासंतिक नवान्नेष्टि यज्ञ' में सौ. व श्री अग्रवाल, सौ. व श्री दत्तात्रय बुलबुले एवं अन्यों ने आहुतियां प्रदान की। तत्पश्चात् भजन, प्रवचनादि कार्यक्रम हुए, जिसमें सर्वश्री आचार्य सत्येन्द्रजी, लक्ष्मणजी आर्य, सोममुनिजी, आर्यमुनिजी, सौ.लीलावती जगदाले, विजयकुमारजी अग्रवाल, तलणीकर महाराज आदियों ने अपने मौलिक विचार रखें। समारोह का संयोजन दयानन्द शास्त्री ने किया। अन्त में एक-दूसरों पर गुलाब फूलों की वर्षाकर होली पर्व का समापन हुआ। समारोह में आर्य समाज के पदाधिकारी सर्वश्री अग्रवालजी, डॉ.धनंयजी औंढेकर, बाबुराव आर्य, पांचाल, बिर्लाजी आदियों के साथ नगर महिला-पुरुष भारी संख्या में सम्मिलित हुए।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

आर्य समाज, परली वैजनाथ की सहयोग से

* राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर *

रविवार दि.३० जून से रविवार ७ जुलाई २०१९

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, नन्दागौल मार्ग, परली-वै.

* **प्रमुख मार्गदर्शक-** पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर) पं.सुधाकरजी शास्त्री, पं.प्रतापसिंहजी चौहान, आचार्य सत्येन्द्रजी विद्योपासक, डॉ.वीरेन्द्र शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, प्रा.अरुण चव्हाण, पं.लक्ष्मणराव आर्य, पं.विज्ञानमुनिजी

प्रवेश सूचना - १) प्रवेशार्थी के लिए नाममात्र शुल्क रु.५००/- रखा गया है ।

२) शिविर में प्रवेश के लिए आयु २० से ४० वर्ष तक हो और शिबिरार्थी १०वी कक्षा के आगे पढा हुआ हो।

३) महिला प्रशिक्षणार्थीयों के लिए निवास की स्वतन्त्र व्यवस्था की गयी है ।

४) प्रशिक्षणार्थी आते समय ऋतु अनुकुल वस्त्र, ओढना-बिछौना, थाली, लोटा, कापी, पेन व म.दयानन्द कृत 'संस्कारविधि' ग्रंथ साथ में अवश्य लावे। कीमती वस्तूएं न लावें।

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

(उपनिषद संदेश) गुरु-शिष्य रक्षणासाठी प्रार्थना!

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। (कठोपनिषद्-६/१९)

अर्थ– परमेश्वर आम्हां गुरु-शिष्यांचे सोबतच रक्षण करो, आम्हां दोघांचे सोबतच पालन करो, जेणेकरुन आम्ही दोघे ब्रह्मविद्येच्या प्राप्तीमध्ये येणाऱ्या अडथळ्यांना सहन करण्यात समर्थ ठरू. आम्हां दोघांचेही शिकणे-शिकविणे तेजस्वी होवो. तसेच आम्ही एक दुसऱ्यांचा कधीही द्वेष-मत्सर करता कामा नये. हे ईश्वरा! आमची आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक दुःखे नाहीशी होवोत.

दयानंद वाणी — पुराणातील खोटेपणा

पुराणातील बहुतेक गोष्टी खोट्या आहेत. परंतू घुणाक्षरन्यायाने एखादी गोष्ट खरीही आहे. जी एखादी गोष्ट आहे, ती वेदादी सत्यशास्त्रांतून घेतलेली आणि ज्या गोष्टी खोट्या आहेत, त्या भटाभिक्षुकांनी रचलेल्या आहेत. उदाहरणार्थ शिवपुराणामध्ये शेवांनी शिवाला परमेश्वर मानून विष्णू, ब्रह्मा, इंद्र, गणेश, सूर्य इत्यादिकांना शिवाचे दास ठरविले आहे. वैष्णवांनी आपल्या विष्णुपुराणात विष्णूला परमात्मा मानून शिवादिकांना विष्णूचे सेवक बनविले. देवी भागवतात देवीला परमेश्वरी आणि शिव, विष्णु वगैरेंना तिचे नोकर बनविण्यात आले. गणेश पुराणात गणपतीला ईश्वर व इतर सर्वांना त्यांचे दास बनविले गेले. या साऱ्या गोष्टी या सांप्रदायिकांनी नव्हे तर कोणी केल्या? ही सारी पुराणे एकाच माणसाने रचली असती, तर त्यांत अशा परस्परांविरोधी गोष्टी आल्या नसत्या. ती विद्वानांनी लिहिली असती, तर अशा विचित्र गोष्टी त्यात मुळीच आल्या नसत्या. यांपैकी एका पुराणातील गोष्ट खरी मानावी, तर दुसऱ्या पुराणातील गोष्ट खोटी ठरते. दुसऱ्या पुराणातील गोष्ट खरी मानावी, तर तिसऱ्या पुराणातील गोष्ट खोटी ठरते आणि तिसऱ्या पुराणातील गोष्ट खरी मानावी, तर इतर सगळ्या पुराणातल्या गोष्टी खोट्या ठरतात. **(सत्यार्थप्रकाश-अकरावा समुल्लास)**

जागतिक योगदिन - २१ जून निमित्ताने -

गरज अष्टांगयोगाच्या आचरणाची...!

- प्रा.धोंडिराम शेप

'योग' ही भारतीय ऋषी-मुनींची जगाला फार मोठी देणगी आहे. आपले सर्व महापुरुष हे योगी होते. भगवान राम, योगेश्वर कृष्ण, महायोगी, शिव, महर्षी दयानंद, स्वामी विवेकानंद व जे.कृष्णमूर्ती यांपासून ते गुरुनानक देव, गुरुगोविंदसिंह, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध व सर्व सुफी संत हे योगी होते.

प्राचीन काळी योग हा पर्वत व गुफांमध्येच मर्यादित होता. त्यास जनसामान्यांपर्यंत पोहोचविण्याचे कार्य स्वामी रामदेव महाराज यांनी केले. योगाचे प्रकार अनेक आहेत. त्यामध्ये हठयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, विभूतीयोग, ज्ञानयोग, सांख्ययोग, कैवल्ययोग, लययोग, साधन योग व अष्टांग योग! महर्षी पतंजली यांनी योगदर्शन या ग्रंथात योगाची व्याख्या **'योगश्चित्तवृति निरोध:।'** अशी केली आहे. अर्थात योगामुळे चित्तवृत्तींचे निरोधन होते. चित्तांच्या पाच अवस्था आहेत. क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ, एकाग्र व निरुद्धावस्था. एकाग्रावस्थेपासून योगाचा आरंभ होतो.

योगेश्वर कृष्णांनी गीतेमध्ये एक श्लोक दिलेला आहे -

''योगस्थ कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय:।

सिद्धसिद्धयो: समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।''

हे धनंजया! तू आसक्तीचा त्याग कर. सिद्धी व असिद्धी मध्ये समान बुद्धिवाला होऊन कर्तव्य कर्म कर. 'समत्व' हेच योग आहे. समत्वालाच संतुलन म्हटले आहे. योग हे भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म, संस्कृती व सभ्यता यांचे मूळ तत्व आहे- 'योगी होणे'. आपल्या पूर्वजांनी योगाला जीवनातील मोठी उपलब्धी मानली आहे. 'योगविद्या' ही अध्यात्म विद्या आहे. वेद, उपनिषद, योगदर्शन, गीता हे योग विद्येचे मूळ ग्रंथ आहेत.

महर्षी पतंजली यांनी अष्टांग योगाला श्रेष्ठ मानले आहे. जगामध्ये विश्वशांतीच्या स्थापनेसाठी सर्वांना जी चिंता आहे, तिचे एकच उत्तर आहे ते म्हणजे 'अष्टांगयोगाचे पालन!' अष्टांग योगामुळे वैयक्तिक व सामाजिक समरसता, शारीरिक स्वास्थ्य, बौद्धिक जागृती, मानसिक शांती व आत्मिक आनंदाचा अनुभव येऊ शकतो.

योगाभ्यासासाठी पतंजलींनी आठ अंग सांगितले आहेत- १) यम २) नियम

३) आसन ४)प्राणायाम ५)प्रत्याहार ६)धारणा ७) ध्यान ८) समाधी! या आठ अंगांचे पालन केल्यामुळे चित्तवृत्तीचे निरोधन होते व अष्टांगांचे पालनाची सुविधा निर्माण होते.त्याचे अंतिम लक्ष्य समाधीपर्यंत जाता येते. योगाचे आठ अंग म्हणजे समाधीपर्यंत पोहोचण्याच्या आठ पायऱ्या होत.

१) यम: - याचा संबंध सामाजिक जीवनाशी आहे. ज्याच्या अनुष्ठानाने इंद्रियांना व मनाला हिंसेच्या अशुभ भावनांपासून दूर करून आत्मकेंद्रित केले जाईल ते यम आहे. यमाचे पाच प्रकार आहेत- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह! याचे वर्णन क्रमश: पुढीलप्रमाणे करता येईल-

१) अहिंसा - अहिंसेचा अर्थ आहे कुठल्याही प्राण्याला मन, वचन व कर्माने त्रास न देणे. मनात सुद्धा कोणाचे अहित न चिंतणे. याचे पालन करणे वाटते तितके सोपे नाही. अहिंसात्मक होणे मोठ्या कठीण तपस्येचे फळ आहे. पण जेंव्हा अहिंसात्मकतेची सिद्धी होते, तेंव्हा त्या पुरुषाची वाणी व नेत्र जे काम करतात, ते बंदूक व तलवारीच्या शक्तीपेक्षा अधिक प्रभावी असते. स्वामी रामतीर्थ जंगलात राहत असतांना हिंस्त्र पशू हे पाळीव प्राण्याप्रमाणे त्यांच्या आश्रमासमोर येऊन दारात बसत! कारण त्यांचे जीवन द्वेष रहित होते. राग व द्वेष मुक्त निर्मळ मनाची बालके सापांसोबत खेळतात. त्यांना साप चावत नाही. याचे एकमेव कारण मनातील अहिंसक भाव! स्वामी दयानंदांच्या जीवनातील घटना आहे. एकदा ते गंगेत स्नान करतांना भयंकर मगर त्यांच्याकडे येत असल्याचे पाहून लोक त्यांना बाहेर या, बाहेर या! ओरडत होते. परंतू स्वामीजी म्हणाले - ''माझ्या मनात त्या प्राण्याला दु:ख देण्याची भावना नसेल, तर तो मला दु:ख देणार नाही.'' त्यावेळी मगर त्यांच्या जवळून निघून गेली.हा अहिंसेचा परिणाम!

२) सत्य - राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांनी एके ठिकाणी लिहिले आहे - 'जर मला यम आणि नियमांच्या १० व्रतांपैकी कोणते निवडणार? असे विचारले, तर मी सत्याचीच निवड करेण! ते म्हणतात - मी सत्यालाच परमेश्वर समझतो. कारण सत्यवादी व ईश्वर यांच्यामध्ये कोणतीच अडकाठी असू शकत नाही. एका कवीने म्हटले आहे.

साच बराबर तप नही,
झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साच है,
ताके हृदय आप।।

महर्षी पतंजली यांनी यम व नियमांचा आधार 'सत्य' यास मानले आहे. जे लोक या आधाराची उपेक्षा करून इमारत निर्माण करू इच्छितात, ते यशस्वी होऊ शकत नाहीत. म्हणून सत्याला तप म्हंटले

आहे. सत्यामुळे मनाची शुद्धी होते. आज पावलो-पावली लोक असत्याचे आचरण करत असल्याचे दिसून येतात. यावर उपाय 'योग'च आहे.

३) अस्तेय – 'स्तेय' म्हणजे चोरी करणे व 'अस्तेय' म्हणजे चोरी न करणे! दुसऱ्याची वस्तू न विचारता किंवा परवानगी न घेता उचलणे, ग्रहण करणे याला 'स्तेय' किंवा 'चोरी' असे म्हणतात. दुसऱ्याची वस्तू प्राप्त करण्याची मनात इच्छा होणे सुद्धा चोरीच आहे. चोरीचे प्रकार अनेक आहेत. १)धनाची चोरी २)अन्नाची चोरी ३) वेळेची चोरी ४)ज्ञानाची चोरी ५)कामाची चोरी ६)न्यायाची चोरी ७) चुगलखोरी ८)शक्ती असूनही दान न देणे ९) वाणी व १०) व्रतांचा अनुचित प्रयोग! म्हणून योगी पुरुषाने चोरी करू नये. तसेच इतरांकडून करवूनही नये. ईश्वराने जे कांही दिले आहे, त्यात संपूर्ण संतुष्ट व आनंदित राहावे.

४) ब्रह्मचर्य – याचा अभिप्राय इंद्रिय संयमाशी आहे. कामवासनेला उत्तेजित करणारा आहार, दृश्य-श्राव्य शृंगार इत्यादींचा परित्याग करून सतत वीर्य रक्षण करीत ऊर्ध्वरेता होणे! यालाच **'ब्रह्मचर्य'** म्हणतात. कोणाचे वासनेच्या दृष्टीने दर्शन, स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषयकथा, परस्पर क्रीडा, विषयांचे ध्यान त्याज्य आहे. ब्रह्मचर्याचा संक्षिप्त अर्थ संयमित जीवन व्यतीत करणे होय. ब्रह्मचाऱ्याने जितेंद्रिय होऊन आपली सर्व इंद्रिये, डोळे, कान, नाक, त्वचा व रसना नेहमी पावित्र्याकडे प्रेरित करायला पाहिजेत. मनात नेहमी मंगलकारक सुविचार व शिवसंकल्प असायला पाहिजे. काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार हे विकार आहेत. ते चोरांप्रमाणे आपल्या शरीरात प्रवेश करतात व थोडा वेळच राहतात, परंतु तेवढ्या वेळात आपले मन व आत्म्याची शक्ती लुटून सर्व कांही बिघडून जातात. शरीराला निस्तेज व शक्तीहीन करून सोडतात. शरीरात विष कालवतात. म्हणूनच वेळेवर जागे व्हा! आपला स्वाभाविक धर्म ओळखा. विकार आपला स्वधर्म नसून हा परधर्म आहे. गीतेत भगवान श्रीकृष्ण म्हणतात **''स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:।''** काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार इत्यादी विकाराच्या भट्टीत स्वत:ला जाळू नका. तुमचे स्वाभाविक गुणधर्म आहेत- मैत्री, करुणा, प्रेम, सहानुभूती, सेवा, समर्पण, परोपकार, आनंद व शांती! तुम्ही निर्विकार आहात. विकारांना तर आपण स्वत: आमंत्रित करतो. वरील पाच शत्रू हे चोरच आहेत. ते शरीराची लूट करतात. यासाठी इंद्रिय संयम म्हणजेच ब्रह्मचर्य आवश्यक आहे.

वेदांनी म्हंटले आहे- **'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत:। इंद्रोह**

ब्रह्मचर्येण देवेभ्य: स्वराभरत्।।' अर्थात् ब्रह्मचर्याच्या तपाने विद्वान लोक मृत्युवर विजय मिळवतात. जीवात्मा ब्रह्मचयाच्या बळावरच इंद्रियाद्वारे सुख प्राप्त करतो.

५) अपरिग्रह – 'परिग्रह' याचा अर्थ सांसारिक वस्तू जमा करणे किंवा आपल्या गरजांना वाढविणे. याला 'अ'कार लावल्याने विरुद्धार्थी शब्द होतो, अर्थात सांसारिक वस्तूचा कमीत कमी संग्रह करणे, जीवन जगण्यासाठी कमीत कमी धन वस्तू इत्यादी पदार्थ व घर यांच्या कमीत कमी संग्रहात संतुष्ट होऊन जीवनाचा प्रमुख उद्देश 'ईश्वर-आराधना करणे' यालाच 'अपरिग्रह' म्हणतात.वेदांनी म्हटले आहे– **शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकीर।** शंभर हातांनी कमवा व हजार हातांनी दान करा. आम्हां सर्वांचा पहिल्या गोष्टीवर जोर आहे, दुसऱ्यावर नाही. यामुळे रोगांचा नाश होत नाही. ज्या मनुष्याच्या जीवनात हा सिद्धांत घटित होतो, तो अपरिग्रहाच्या आनंद प्राप्तीचा धनी होतो.

नियम – पाच नियम योगांगामध्ये दूसरी पायरी आहे. नियम महर्षी पतंजली लिहितात–''**शौचसन्तोषतप: स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा:।।**'' म्हणजेच शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्राणेधान हे पाच नियम आहेत, ते खालीलप्रमाणे –

१) शौच – या शब्दाचा अर्थ पवित्रता, शुद्धी किंवा शुचिता असा आहे. नियमांचा संबंध वैयक्तिक जीवनाशी आहे. स्वच्छता किंवा शुद्धी सुद्धा दोन प्रकारची असते– एक बाह्य व दूसरी आंतरिक(आतील)! महर्षी मनूंनी शौच या विषयावर खूपच चांगले सांगीतले आहे –

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति
मन: सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा
बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

साधकाला दररोज पाण्याने शरीराची शुद्धी, सत्याचरणाने मनाची शुद्धी, विद्या व तपाने आत्म्याची शुद्धी व ज्ञानाने बुद्धीची शुद्धी करायला पाहिजे. आज आपण बाहेरच्या शुद्धीकडेच जास्त लक्ष देत आहोत. संस्कृतच्या एका कवीने म्हंटले आहे – **''अन्त:स्नानविहीने बाह्यस्नानं किं करिष्यति।''**

२) सन्तोष – हे एक असे धन आहे की ज्याला हे प्राप्त झाले, त्याला जगात कांहीच कमी पडत नाही. मानवला सर्वसंपन्न करणारे जगात कोणते धन असेल, तर ते आहे 'सन्तोषधन'! आपल्या जवळ असलेल्या सर्व साधनांनी पूर्ण पुरुषार्थ करा. जे कांही फळ मिळेल, त्यातच संतुष्ट राहणे आणि जे प्राप्त नाही, त्याची इच्छा न करणे अर्थात पूर्ण पुरुषार्थ व ईश्वरकृपेने ज़े प्राप्त होईल, त्याने असंतुष्ट न होता अप्राप्ताची तहान न ठेवणेच संतोष होय.

कबीरनीती सांगते-

गोधन गजधन बाजिधन
और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोषधन
सब धन धूलि समान ।।

सन्तोषरुपी अमृतपान केल्याने तृप्त होऊन शांतचित्त मनुष्याला जे आत्मिक व हार्दिक सुख मिळते, ते धनवैभवाकरिता व्याकुळ होऊन इकडे-तिकडे भटकणाऱ्या मनुष्याला कधीच मिळू शकत नाही. एके ठिकाणी म्हटले आहे - "**सन्तोषमूलं सुखं, दुःखमूलं विपर्ययः।**" सुखाचे मुळ आधार संतोष आहे आणि याच्याविरुद्ध तृष्णा, लालसा या दुःखाच्या मूळ आहेत.

३) तप - महर्षी व्यास द्वंद्व सहन करण्याला 'तप' म्हणतात. तपाचा अर्थ शरीराला कष्ट देणे असा नाही. आपल्या सद्उद्देशाच्या सिद्धीत जे कांही कष्ट, अडचणी, प्रतिकूलता येतील त्यांचा सहजपणे स्वीकार करून निरंतर विचलित न होता आपल्या उद्देशाकडे जावे लागते. महर्षी पतंजलींनी योगदर्शनमध्ये तपाची व्याख्या "**तपो द्वंद्व संहनम।**" अशी केली आहे. अर्थात् शीत-उष्ण, सुख-दुःख, स्तुती-निंदा, तहाण-भूख, मान-अपमान, हार-जीत यांना समान दृष्टीने पाहत त्यांचे स्वागत करणे. महाभारतात यक्ष युधिष्ठिराला प्रश्न विचारतात- '**तपसः' किं लक्षणम्?**' तेंव्हा ते उत्तर देतात- '**तपः स्वधर्मवर्तितव्यम्।**' म्हणजेच आपल्या कर्तव्यपालनात ज्या अडचणी येतील, त्या सहन करून निरंतर आपल्या स्वधर्माचे पालन करणे म्हणजे '**तप**' होय. सर्व प्रतिकूलतेत समान राहणे हे तप आहे. अग्नीत तापणे किंवा एका पायावर उभे राहून आपल्या शरीराला कष्ट देणे तप नव्हे.

४) स्वाध्याय - महर्षी व्यास म्हणतात - '**प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं वा।**' अर्थात् प्रणव ओंकाराचा जप करणे आणि मोक्षाकडे घेऊन जाणारे वेद, उपनिषद, योगदर्शन गीता इ. जी सत्यशास्त्रे आहेत, त्यांचे श्रद्धापूर्वक अध्ययन करणे '**स्वाध्याय**' होय. '**सु-अध्ययनं स्वाध्यायः।**' उत्तम ग्रंथांचे अध्ययन, ऋषी प्रतिपादित सद्शास्त्रांचे पूर्ण श्रद्धेने व आस्थेने अध्ययन करणे म्हणजेच स्वाध्याय!

५) ईश्वर प्रणिधान - शेवटच्या यमाची व्याख्या करतांना महर्षी व्यास म्हणतात - '**तस्मिन् परमगुरौ सर्वक्रियाणामर्पणम्।**' अर्थात् गुरुंचे गुरु अशा त्या परमगुरु परमात्म्याला आपले सर्व कर्म अर्पण करणे! देवाला आपण तेच समर्पित करू शकतो, जे शुभ, दिव्य व पवित्र आहे. म्हणून साधकाने पूर्ण श्रद्धेने भक्तीपूर्वक, सर्व प्रयत्नाने तेच कार्य करावे की जे तो देवाला समर्पित करू शकेल! खरा भक्त नेहमी हाच विचार करतो की माझ्या जीवनात

शरीर, मन, बुद्धी, शक्ती, रूप, यौवन, समृद्धी, ऐश्वर्य, पद, सत्ता, मान इत्यादी जे कांही मला मिळाले आहे, ते सर्व ईश्वर कृपेनेच मिळाले आहे. म्हणून मला माझ्या सर्व शक्तीचा उपयोग आपल्या प्रिय प्रभूला प्रसन्न करण्यासाठीच करायला हवा. त्यालाच अर्पण करणे म्हणजे **'ईश्वर प्रणिधान'** होय. यम व नियमानंतर आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधी हे योगाचे अंग देखील तितकेच महत्त्वाचे आहेत. त्यांचा विस्ताराने अभ्यास व आचरण करणे हे प्रत्येक मानवाचे कर्तव्य आहे. केवळ एका अंगाचे पालन करून चालणार नाही, तर आठही अंगांचे श्रद्धेने व निष्ठेने अनुष्ठान करणे म्हणजेच खऱ्या अर्थाने योगी बनणे होय. आज खऱ्या अर्थाने योगांच्या आठही अंगांचे पालन करणे ही काळाची गरज आहे.

(लेखक निवृत्त मु.अ.व भारत स्वाभिमानचे परभणी जिल्हा प्रभारी आहेत.)

-हुतात्मा स्मारक, हनुमान मंदिरजवळ, जिंतूर जि.परभणी मो.८८३०३४४४०२

-० शोक वार्ता ०-

दत्ता मुळे यांना पितृशोक

शासनाच्या उद्योजकता विकास विभागाचे निवृत्त अधिकारी श्री दत्ता मुळे यांचे वडील श्री विश्वनाथराव मत्ताजी मुळे यांचे दि.२९ मार्च २०१९ रोजी सकाळी ११ वा. वृद्धापकाळाने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८९ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे सहा मुले, एक मुलगी, जावई, सुना, नातू, पणतू असा परिवार आहे.

दिवंगत श्री विश्वनाथराव हे एक निर्मळ मनाचे कष्टकरी शेतकरी, शुद्ध शाकाहारी व आर्य वैदिक सिद्धांतावर नितांत श्रद्धा बाळगणारे प्रतिष्ठित ज्येष्ठ नागरिक होते. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी दुपारी पं.महाळप्पा दुधभाते (गुंजोटी) यांच्या पौरोहित्याखाली मौजे तुरोरी ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद या मूळ गावी वैदिक अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

गिरजाबाई देशमुख कालवश

नांदेड येथील आर्य समाजाचे कोषाध्यक्ष श्री संभाजीराव किरकन यांच्या मातु:श्री श्रीमती गिरजाबाई देवराव देशमुख यांचे मागील महिन्यात वार्धक्यकालीन रुग्णावस्थेमुळे निधन झाले. त्या ७६ वर्षे वयाच्या होत्या. मूळच्या किकी गावच्या रहिवाशी असलेल्या गिरजाबाई या ज्येष्ठ नागरिक म्हणून ओळखल्या जात. कुटुंबियांना सुसंस्काराची सावली देत सर्वांचे हित साधण्यात त्या अग्रणी ठरल्या.

स्वामी दिव्यानन्दजी यांचे निधन

खयातनाम योगप्रसारक व हरिद्वार येथील पातंजल योगधाम आश्रमाचे संस्थापक अध्यक्ष स्वामी दिव्यानंदजी सरस्वती यांचे दि.२८ मे २०१९ रोजी दु:खद निधन झाले. गेल्या कांही महिन्यांपासून ते आजारी होते. देश-विदेशात अष्टांग योगविद्येचा प्रचार व प्रसार करण्याकरिता त्यांनी अथक परिश्रम घेतले. गुरुकुल झज्जर येथे स्वामी ओमानंदजींच्या सान्निध्यात राहुन योगेंद्र पुरुषार्थी या तरुणाने संस्कृत, व्याकरण, वेद, उपनिषद, तसेच विशेष करून योगविद्या हस्तगत केली व कांही काळ अध्यापन ही केले. नंतर स्वामीजींकडून संन्यास दीक्षा घेऊन ते 'दिव्यानंद सरस्वती' बनले. पुढे हरिद्वारच्या आर्यनगर भागात 'पातंजल योगधाम' ची स्थापना करून याच आश्रमाला योगप्रचाराचे केंद्र बनविले. त्यांचा अनुयायी वर्ग भारतासोबतच विदेशातही विखुरला आहे. त्यांच्या पार्थिवावर हरिद्वार येथे दुसऱ्या दिवशी दुपारी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

रामराव शेट्ये यांचे निधन

मुदखेड (जि.नांदेड) येथील आर्य समाजाचे कोषाध्यक्ष व सेवानिवृत्त मु.अ.श्री रामराव शिवरामजी शेट्ये यांचे दि.३० मे २०१९ रोजी स.८.३०वा. च्या सुमारास हृदयविकाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७७ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात पत्नी, दोन मुले, सुना, मुलगी, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे.

दिवंगत श्री शेट्ये हे आर्यसमाजाचे निष्ठावान सक्रिय कार्यकर्ते होते. शिक्षकी पेशा अंगिकारून जीवनभर विद्यादानाचे पवित्र कार्य करण्यासोबतच आर्य समाजाच्या प्रचारकार्यात ही ते आघाडीवर राहिले. सिद्धांतनिष्ठ, मनमिळावू, सरल स्वभावी, साधेपणाची राहणी असलेले मितभाषी व्यक्तिमत्त्व म्हणून त्यांची परिसरात ओळख होती. स्थानिक सरदार वल्लभभाई पटेल शिक्षण संस्थेचे संचालक आणि भाजपाचे कार्यकर्ते म्हणूनही ते ओळखले जात.

त्यांच्या पार्थिवावर दुपारी ४वा. पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. महाराष्ट्र सभेचे अंतरंग सदस्य श्री सुरेशजी चिंतावार, धर्माबादचे आर्य

कार्यकर्ते सुरेशजी गंजेवार, नागनाथ गुणवलवार, जगन्नाथ हंगीरगे यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला. तिसऱ्या दिवशी मुदखेड आर्य समाजाचे मंत्री श्री गोविंदराव बोड्डेवार यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ संपन्न झाला.

सूचना : याच महिन्यात लातूरचे श्री शीतलचंद्रजी डुमणे, देगलूरच्या स्वा.सै.पत्नी श्रीमती अनुसयाबाई कळसकर, लातूरचे विद्वान पं.चंद्रेश्वरजी शास्त्री यांचे वडील श्री यादवजी यांचे निधन झाले आहे. त्यांच्या मृत्यूचे विस्तृत वार्तांकन आगामी जुलै २०१९ अंकात प्रकाशित करण्यात येईल. – संपादक

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजातर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली..!
शोकाकुल कुटुंबियांच्या दु:खात आर्यजन सहभागी आहेत...

- वैदिक गर्जना सूचना -

वैदिक मानवतेचे तत्त्वज्ञान व विचार आणि आर्य समाजाचे विविध कार्यक्रम जाणून घेण्याकरिता सूज्ञ वाचकांनी रू.१००० सभेकडे पाठवून 'वैदिक गर्जना' या मासिकाचे आजीवन सदस्य व्हावे. तसेच ज्या ग्राहकांना हे मासिक मिळत नसेल त्यांनी सभाव्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार(मो.९४२३४७२७९२) यांचेशी संपर्क करावा.
एस.बी.आय.परळी खाते क्र.11154152843 IFSC Code-SBIN0003406

आर्य समाज परली-वै. अंतर्गत

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम

-० सहाय्यता हेतु निवेदन ०-

सभी गुरुकुल प्रेमी माता-बहनों व सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि, परली के नंदागौल मार्ग पर स्थित श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में बच्चों को संस्कृत वेद-विद्या अध्यापन के साथ ही उन्हें देश का एक चरित्रवान व आदर्श नागरिक बनाने हेतु प्रयत्न जारी है। इसके लिए अनेकों दानदाता सहयोग हेतु आगे आ रहे हैं। बहुत सारे सज्जन एवं दानी आर्य कार्यकर्त्ता प्रतिमाह रू.१००० देने के लिए कृतसंकल्पित हो चुके हैं। कृपया आप भी अपनी पवित्र दानराशियाँ (रू.१०००, रू.५०००, रू.११०००) इस गुरुकुल के लिए निम्नलिखित बैंक खाते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

खाता धारक का नाम - मंत्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ
बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, मोंढा मार्केट, परली-वै. जि.बीड
बैंक खाता क्र.11154152876, IFSC Code SBIN0003406

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

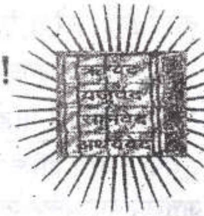

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

<u>मानव कल्याणकारी उपक्रम</u>

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

आर्य समाज गांधी चौक लातूर के वार्षिक उत्सव पर व्याख्यान देते हुए स्वामी सच्चिदानंदजी। साथ में हैं पं.संदीपजी वैदिक।

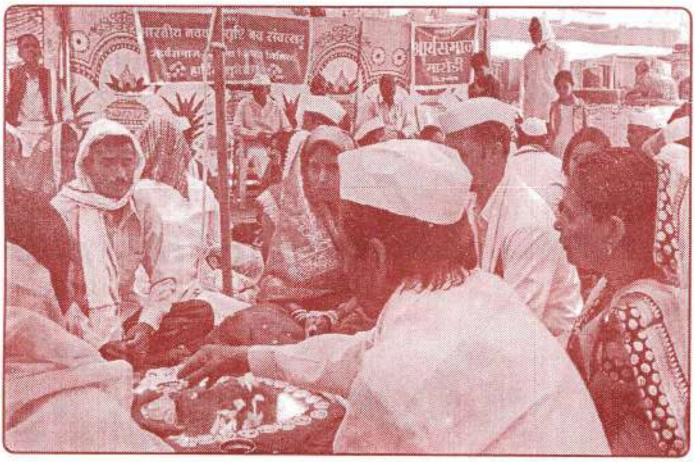

अकोला के समीपस्थ मारोडी ग्राम में आयोजित सामूहिक अष्टकुण्डीय यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुए श्रद्धालु यजमान।

बेडगा ता.उमरगा में आयोजित 'मानवता संस्कार शिविर' में बच्चों को पुरस्कार प्रदान करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारी।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ____________________

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली–वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया ।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

।। ओ३म् ।।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से **वैदिक गर्जना** मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट